के बाद डा० नगेन्द्र ही दूसरे ...

डॉ० रामविलास शर्मा

डॉ० रामविलास शर्मा मार्क्सवादी आलोचक हैं। उनके संबन्ध में डा० बच्चन सिंह ने लिखा है कि "मार्क्सवादी आलोचकों में रामविलास शर्मा की दृष्टि सबसे अधिक पैनी, स्वच्छ और तलस्पर्शी है। विचारों के स्तर पर वे कहीं भी समझौतावादी नहीं होते। वे बहुत ही खरे दो टूक बात कहने वाले निर्भीक आलोचक हैं।"

मार्क्सवादी आलोचना का प्रादुर्भाव शर्मा जी से पूर्व ही हो चुका था। 'हंस' के सम्पादक के रूप में डा० शिवदान सिह चौहान उसके सैद्धांतिक पक्ष पर बहुत कुछ लिख चुके थे। प्रकाशचन्द्र गुप्त ने भी इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये थे। आरम्भ में प्रगतिवाद साहित्य की व्यापक प्रगतिशील चेतना के उन्मेष को लेकर अवतीर्ण हुआ था, किन्तु बाद में उसका आशय कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों का उद्घोषणा मात्र रह गया था। मार्क्सवादी साहित्यकार केवल उस साहित्य को उत्तम मानते थे जिसमें सर्वहारा वर्ग के वर्ग-संघर्ष का चित्रण हो, पार्टी की नीतियों के आधार पर जनता को सशस्त्र क्रान्ति की चेतना प्रदान की गई हो। इस संकीर्णता की कटु आलोचना भी हुई। शनैः-शनैः साहित्यकारों ने संकीर्णता से मुक्त होने का प्रयास भी किया।

'जहाँ तक डा० रामविलास शर्मा का प्रश्न है, वे मार्क्सवाद आलोचक होने के

कारण साहित्य में सर्वहारा वर्ग के चित्रण पर बल देते हैं। 'साहित्य संदेश' में प्रकाशित अपने एक लेख में उन्होंने कहा है, 'साहित्य लिखते समय साहित्यकार को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह 'सर्वहारा' का सहयोगी साहित्य निर्मित करे।" पर यह एक संकीर्ण मनोवृत्ति है। समाज में केवल सर्वहारा वर्ग की ही समस्याएँ नहीं हैं, वर्ग-वैषम्य से पीड़ित जनता भी है। क्या प्रगतिशील साहित्य को उनके विषय में न सोचना चाहिए ? केवल 'सर्वहारा वर्ग' की बात कहना साहित्य को संकीर्ण परिधि में आबद्ध कर देता है।

रामविलास शर्मा की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने हर नये का समर्थन और हम प्राचीन का विरोध नहीं किया। उन्होंने उन मार्क्सवादी आलोचकों पर आरोप लगाया जिन्होंने पंक्तियाँ खोज-खोजकर तुलसीदास को प्रतिक्रियावादी, ब्राह्मणवादी आदि सब कुछ कहा है। उनका मत है—"यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने साहित्य की पुरानी परम्पराओं से परिचित हों। परिचित होने के साथ हमें उनके श्रेष्ठ तत्त्वों को भी ग्रहण करना चाहिए।" (संस्कृति और साहित्य की भूमिका)।

रामविलास शर्मा की समीक्षा-शैली की प्रमुख विशेषता है व्यंग्य की मार करना। डॉ० नगेन्द्र की 'विचार और अनुभूति' नामक पुस्तक पर चुटकी लेते हुए वे कहते हैं कि "नगेन्द्र जी के विचार उन्हें एक कदम आगे ढकेलते हैं तो उनकी अनुभूति उन्हें चार कदम पीछे घसीट ले जाती है। इस पुस्तक का नाम एक कदम आगे और चार कदम पीछे भी हो सकता है।"

एक अन्य उदाहरण देखिए—

"नगेन्द्र के यहाँ हर चीज शुद्ध है। बानगी देखिए—

१. साहित्य के क्षेत्र में तो शुद्ध मनोविज्ञान का अधिक विश्वास उचित होगा।

२. लोक प्रचलित अस्थायी वादों के द्वारा साहित्य का रस शुद्ध हो जाता है।

३. छायावाद निश्चित ही शुद्ध कविता है।

हम अपनी तरफ से यही कह सकते हैं कि नगेन्द्र जी की आलोचना बिल्कुल शुद्ध आलोचना होती है।

शर्माजी की समीक्षा शैली की एक अन्य विशेषता यह है कि उसमें उदाहरण विद्यमान रहते हैं। इससे आलोचना में बल आ जाता है। उन्होंने जब महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन की विचारधारा की आलोचना की थी तो साहित्य में जैसे एक भूचाल आ गया था। किन्तु उन्होंने प्रमाण देकर अपनी बात कही थी इसलिए आने वाले तूफान से अप्रभावित रहे। स्वयं उनकी आलोचना जब अमृतराय ने 'हंस' में की तो उन्होंने यही कहा कि आप प्रमाण दीजिये, बिना प्रमाण दिये मैं आपके किसी आरोप पर गम्भीरता से विचार नहीं करूँगा।

शर्माजी एक सफल आलोचक हैं। उनके जिन गुणों ने उन्हें सफल आलोचक बनाया है वे हैं—विद्वत्ता, भाषाधिकार प्रमाणिक बात कहने की आदत, वैज्ञानिक दृष्टि, निष्पक्षता। निष्पक्षता के गुण ने जहाँ एक ओर उनसे किसी की भी

बेहिचक आलोचना कराई है, वहाँ दूसरी ओर छोटे-छोटे लेखकों को यथोचित सम्मान भी दिलवाया है। उनकी विशेषता है कि उनमें अहंकार नाममात्र को भी नहीं है। प्राय: जाने-माने विद्वान नवोदित साहित्यकारों की उपेक्षा करते हैं। किन्तु शर्माजी किसी भी नये रचनाकार का उद्धरण बड़ी उदारता से अपनी रचना में दे देते हैं। यह उनकी निष्पक्षता ही है जो वे एक ओर पन्त और राहुल जैसे ख्यातिलब्ध साहित्यकारों को नहीं बख्शते और दूसरी ओर नये रचनाकारों की वांछनीय सराहना करते हैं।

रामविलास शर्मा ने हिन्दी में सन्त साहित्य, भारतेन्दु युग, छायावाद प्रेमचन्द, निराला आदि पर अत्यन्त सुलझे हुए विचार व्यक्त किए हैं। सन्त कवियों के विषय में वे लिखते हैं—'सदियों के सामन्ती शासन की शिला के नीचे जन-साधारण की सहृदयता का जल सिमट रहा था, सन्त कवियों की वाणी के रूप में यह अचानक फूट पड़ा और उसने समूचे भारत को रस सिक्त कर दिया।" भारतेन्दु युग की नव्य-चेतना और नव जागरण ने उन्हें प्रभावित किया और उन्होंने मुक्त कंठ से उसकी सराहना की। प्रेमचन्द की जनवादी चेतना के वह मुक्त कंठ से प्रशंसक हुए। उनका कथन है—"हिन्दुस्तान के किसानों को प्रेमचन्द की रचनाओं में जो आत्माभिव्यंजन मिला, वह भारतीय साहित्य में बेजोड़ है।

छायावादी काव्यधारा का उन्होंने अभिनन्दन किया और नई रोमांटिक कविता को दाद देते हुए कहा—'नई रोमांटिक कविता ने नायक-नायिकाओं की क्रीड़ा के स्थान पर व्यक्ति और उसके भावों-विचारों को प्रतिष्ठित किया। निष्प्राण प्रतीकों के बदले सजीव भावों के द्वारा वे साहित्य को जीवन के निकट लाये।" निराला के वे प्रशंसक हैं। उन्होंने ईमानदारी के साथ स्वीकार किया है—'बारह वर्ष तक इतने निकट सम्पर्क में रहने के कारण उन पर पूर्ण तटस्थता से लिखना मेरे लिए प्राय: असम्भव है" किन्तु उन्होंने अपने प्रयास के विषय में घोषित किया है—"साहित्य के हित को ध्यान में रखते हुए मैंने यही प्रयास किया है कि कहीं उनकी अनुचित प्रशंसा न हो और कहीं भी उनके साहित्य की कमजोरियों पर पर्दा डालने से हमारी नई साहित्यिक प्रवृत्तियों का अहित न हो।" कहना न होगा कि यही दृष्टि प्रत्येक आलोचक में होनी चाहिए तभी उसकी आलोचना सही होगी।

डॉ० रामविलास शर्मा आमतौर पर छन्दोबद्ध कविता के समर्थक हैं। फिर भी उन्होंने निराला के मुक्त छन्द की प्रशंसा की है। कारण यह है कि निराला के मुक्त छन्द में गेयता, ध्वनि साम्य, सानुप्रासिकता, काव्य गुणों की सत्ता आदि विशेषताएँ रहती हैं। इसके विपरीत जिन कवियों के मुक्त छन्द कोरे गद्य में बदल जाते हैं, उनकी कटु आलोचना की है।

डॉ० रामविलास शर्मा साम्राज्यवाद, पूँजीवाद आदि के कट्टर शत्रु हैं और जिन रचनाओं में इनकी यत्किंचित भी झलक मिलती हो, उनकी वे आलोचना करते हैं। उनका मत है—"जो पूँजीवाद या साम्राज्यवाद की खुशामद करे, उन्हें स्थायी बनाने में मदद करे, प्रगति के मार्ग में काँटे बिछाए, वह देश का शत्रु है और हिन्दी का शत्रु है, धर्म और संस्कृति के नाम पर जनता का गला घोंट कर वह पूँजीवाद के धनत्व को मोटा करना चाहता है। उनसे सभी लेखकों और पाठकों को सावधान रहना चाहिए।"

डॉ० रामविलास शर्मा की विचारधारा में काव्यशास्त्र की परम्परागत मान्यताओं के लिए कोई स्थान नहीं। वे रस और अलंकार विषयक प्राचीन मान्यताओं के विरुद्ध हैं। रस को 'ब्रह्मानन्द सहोदर' कहने वालों के साथ उन्होंने खूब चुटकियाँ ली हैं। आधुनिक युग में प्राचीन रस सिद्धान्त की निःसारता उन्होंने सिद्ध की है। परन्तु इसका आशय नहीं है कि वे हर प्राचीनता के विरोधी हैं। हम देख चुके हैं कि वे सन्त साहित्य और तुलसी के प्रशंसक रहे हैं। मध्यकालीन हिन्दी कविता में गेयता' में वे लिखते हैं—"गाँव के किसानों को आए दिन के व्यवहार में तुलसी, रहीम, सूर, गिरधर आदि की उक्तियाँ उद्धृत करते सुनिए तो पता चलेगा कि वे साहित्यकारों के शब्दों को किस प्रकार अपने जीवन में परखते चलते हैं। जो साहित्य इस तरह उनके जीवन में घुल-मिल जाता है, वही टिकाऊ होता है, दूसरा नहीं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डॉ० रामविलास शर्मा आधुनिक हिन्दी आलोचकों की अग्रिम पंक्ति में आसीन हैं।